

DPN 6976

शिव महिमा SIVA MAHIMĀ

Title :

Run. No. 7701

Cat. No. 3 ✓

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. हिन्दी

Size in cms. 16.2 X 7.8

Folios 12

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor ✓

डा. कमलप्रकाश मल्ल

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Dr. Kamal Prakash

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Malla

Material : palmleaf / paper / thyāsaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमो शिवाय ॥ श्री शम्भु चरण पादुका नमस्तुते ॥

P.T.O.

દ્વસરા સંઘ જે નિરંજન દેઓ
અનંત સિધા મેરિ પાયા મેઓ
અવધન મુગ્ધતા વંધન જાય
જોટિ મટે સસ્તુર દે પુ સાદિ સમાય ॥

Col. થો સદ્ગુણુ સુનાનં લોભ યાતસા પંચ માદા પાતક તાક જુન સુમં ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
को॥ श्रीदेवि उवाच ॥ कते कजुगस्वामि जोगमा
रहे ॥ कडे कजुगस्वामिले थापि सली ससारं
उवाच ॥ सुनो देवि वारगने ॥ अणुसंखजुगदेवि जो
गमारहे ॥ इति सजुगदेवि सने अणुसनमारहे ॥ अणु

र्दजुगदेविलेऽप्रवतारं॥ नवर्दजुगदेविलेऽपिलेस्
 स्त्रीसंसारं॥ संखनसमुद्रेमुंदा नमाया॥ काहास्यऽप्रा
 याजोग्नि॥ माहासंखसिंधुरतां द्रदिपधुपउतरेऽप्र
 वतारं॥ नवर्दनवर्दधुंधुंकारं॥ साखिनसर्वदन
 हिपर्वतकांल॥ नहिजलनहिठलनहिऽप्रकास॥ नमे

रुमंडिकविलास॥ दर्दुईस्वरभयाप्रकासं॥ ताहांसं
तरुपिगोष्पवतारं॥ ईस्वरार्धग्यधरिया॥ मरिगे
लो गौरारहि गेलो रूद्र॥ हातपंगपिजलकिंनरा॥ ख
टइसनमेरिघरेघमाया॥ जलपलंसहिठल गौराषो
लो अविरतकुविउप्राग्यधरो॥ जलमध्येउपजेमेनका

स्थितिपंचमासंखलैगोरोनि केरहात ॥ पैदिले संख वद
ह्रींको दिया मगुजुग वेदस्वामि ॥ प्रथम वन किया ॥ तर्बु
लोक द्युदजजु वेदस्वामि वेद ॥ प्रथम वन किया ॥ पधिगु
रागा वगिसारं ॥ एप्रनु भोग सिद्धी का हांजोगि उत्तरि
वपार ॥ प्रहेनिसिधौ जोगि हत निग्र करे सयं को तिपु

रूसलै उधार धरे ॥ गा वगिसा वगिसर स्वति भगवति
वैवेदि वीपगि सुवर्न सिंधिरूप रवो लितां म्परदिज
मद्यंति ॥ नदि वैतर निगंगा परिया पिसुमा तालै वधा
रवारजुगुति कोलिया माता ॥ सिव गा वगि चार वेदि चार
मुखि चार ग्वरिया पति पार निवार साधु पति पारनि ॥ चार

दैतेसंहारनिरखोरखोमाताशिवगायत्रि॥यिसुपिस्तुकों
अघोरकुंदपंदतरखोवह्नीविष्णुमहेस्वरं॥सारिविमुक्त
तोप्रमृढलिलातनेयंदसुर्जस्वर्गनारायनकन्याकेदार॥
खमाईस्वरपुत्रसप्तदिपउदियविस्वरभारिवेतेतेसको
टीदेवतामेरेपुसारिव॥पंचमासंखदतिसगावयूगंगाज

मुनासरस्वतितापिकन्याकुमारधरे॥संखसिवपुरिपा
वैस्वरदुवारेपद्मिगुनगायत्रिसारं॥ॐ नमोसिवा
श्रीसंभुवरनयादुर्जनस्तुत्या॥॥द्वसरासंखनारां
यनयाया॥धर्तिफोरियायातंदुसुरनरगंधर्वधनया
ताकरोनारायन॥तनासेंवुउथोवतारांयनकरोपुसा

र॥ चरिबो करि ज्या या जो गि कि दिजे वै कुंठ पाया ॥ पधि
गुन गाय जि सारं ॥ ॐ नमो सिवाय शक्ती संभु चरन पा
दुका नमस्तुते ॥ तिसरा संख सिद्धने पाया सिध दुध
लैक विलास गया ॥ इद्र लाय धर्म या ग्रा नंद क विलास वसे ॥
विश्वर गोरख मक्षिंद्र कहे गुरु का कि जे गोर कहे ज ते सने

लरिं कुल उधार ॥ पधिगुन गाय तिसारं ॥ ॐ नमो सिद्ध
 धर श्री संभु चरन पादुका नमस्तुते ॥ वीधिय संख देवि ने
 अ पाया ॥ कान्य कुंद गलैत देवि ॥ प्रानरन के आव जो गि पुद्दे सा
 रं ॥ संख उत्तपन कथो विचार हमे देवि वारे भोरे कुचुन जाने ॥
 संख न भो संख कथन न जाय ॥ तिनि भुवन जो गि माया कवन

जोग्निष्ठागमजाने कवनजोग्निपदिमजाने कवनजोग्निपंच
संस्तीतवरकानजाने॥ सुनोदेवि वारगरो उद्गता जोग्निष्ठाग
मजाने सहज जोग्निपदिमजाने॥ गौरा जोग्निपंच संचितवरका
नजाने॥ पधिगुनगायत्रिसारं॥ ॐ नमोसिवाय रक्षी संभु
वरनपादुका नमस्तुते॥ पंचसंखजे संख उधार वल्लीवि

सुनुमहेत्थरलेऽप्रवतारं मामेहे लोपुजगरि न्धारं॥ सु
स्तिरयेयकं कालऽप्रजपाजपसुने मनधरे॥ पंचभुतऽप्रा
तमायकं तकरै कवन संख स्वामिऽप्रायेऽप्रदेस॥ कवन
न संख स्वामिति निभुवन साजे॥ कवन संख स्वामिऽप्र
नंत सिध काने द्रक्ष न होजे॥ ईस्वर वा रा॥ सुनोदेवि वा

रगने॥ सहजा संखः प्रापे प्रवेस सुवायु संख मर्च देहे
लावाजे॥ जिवंत संखः समुद्र गाजे प्रति संख कारिखं
दसाजे॥ खिल संखः अनंत सिध काने दुसन होजे॥ पद
धिगुन गायजि सारं॥ ॐ नमो सिवाय रञ्जी संभुवरन
पादु कानम सुते॥ रतायकं मनु संखः समुद्रावरकर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्रीसंखजुग कृति सशुभ्रदि
धर्मकथ काले लक्ष काले यकपू नू सउ नप नह या न वे न हा
ना स्वामि सि व संग टि न वे न हा ना स्वामि व द्वा विष्णु जी ग
म स स क म् बु ज क उ क ना ना टि य क म ध्य य क हा ना आ
प ट ज वा य म् ध न क या आ का स र या पु का स र नि अं द ह
या न आ र य स क ल ह या य क यि स्य न व द्वा द स न ग या ॥ ॐ ॥

सफ पाना ल म ध द्य पा का द् ~~का द्य पा द्~~ का उ प आ क म ल
क म ल उ प न क् म न क् म न उ प न काल सूरि व काल सूरि
उ प न म क् म क् उ प न क क् क क् उ प न स फ पा र्ति ॥
पृ थि मि पृ थ मि उ प न म ध मं द ल म् ध मं द ल उ प न
वा य म् मं द ल वा य म् मं द ल उ प न ज मं द ल ज मं द ल उ
प न सूर ज मं द ल सूर ज मं द ल उ प न ह म मं द ल ह म मं

दलउप व वंदमंल वंदमं दलउप वटा नामं दलटा
नामं दलउप व द्मं दल द्मं दलउप व सुगंधि
कामं दल सुगंधि कामं दलउप व सुसुसी कामं द
ल सुसुसि कामं दलउप लैषन वकुमं दल खुट वकु
मं दलउप व गगनमं दलगगन दलउप व गगन
कामं दलगगन कामं दलउप व ॥ अहं द नृवृत्त धा

नहया नृकास नृनिचका हं मणं उप जाला संख वक्ती
किउसा मख सुत पठा न नह दस मा सख उत प नहया नृ
संख नृनिचपाया नृना नृना दि ० स्व न क दिया ० ॥ व न
सुख लपा प्रकासं ॥ ३ ॥ काल वंधू ह वला य नृदि नृनादि
सिध क वंधू पायिस नं सर्वपाया सा मि वृधिक हं क हं स्वा
मि नृति धर्म क सुद्धि ॥ जवन हा ना धुनि न नृकास जवन हा

ॐ यत्वनपानिजु वेंन हाटा पूजा नपत्रिज वान हाता वंदन सुर्ज
ज वेंन हाता दुह विज वेंन हाटा दान मून ज वेंन हाता मायिन
वाव ज वेंन हाटा गर्ल न वास ज वेंन हाता कि जान भूया न
ज वेंन हाता वादन सासु ज वेंन हाता ग्रीसिन संसान सु
ख मना संधू ज वेंन हाता नदिन दिन ज वेंन हाता पाप
नमून ज वेंन हाता हिंदू न मास न मान ज वेंन हाता क

जाना कि ल्या पूरुप मधुसामिलिया वास आय आप सं
हर या प्रकास ॥ सुनाद विषा वति जि ॥ धर्म संख पद
धंता यि स्वज जागि पधंता गूनंता सुनंता मूज मूगूनि प
धमान धहा रू याह विपून धर्म न व ना आय पा प ग या
दून ॥ ॐ न मासि वाय श्री संहर वन पादू कान म सुन ॥
दस ना संख जनि नं ज न द आ नूनं सि धा म विषा या

ॐ अ व ध न म ग र ता वं ध न जा य आ टि म ढ स सु न
ह प्र स हि स मा य ॥ सु ना द वि पार्व ति जि ॥ ध र्मा ॥ नि स ना
सं ख ज प उ न यि स न ह या सु वा दि सि अ ग्य च ल जि व ट
हि या अ ह नि सि मा र्ग न पं क्ति म न ता जाल दू य पा नि द ना ॥
सु ना द वि पार्व ति जि ॥ ध र्मा ॥ वी षा सं ख ज आ का स र नि ऊ सा
रि ग व द ल यिं का ल तां हा सु र्ज स व ज प उ ज ह ट सु का ल पा
ना

या ह नि व क्ता रू नि जा गं द्र सि धि सं क ठु ॥ सु ना द वि पार्व ति
जि ॥ ध र्मा ॥ पं च मा सं ख ज ध र्ति न पं च मा ति ध त्रि या न पं च स
कि र या स ट ग र व च न विला का या का र्थी विला वि वा य सा
न ज न स ट पा या जा ग्यं द्र मा कृ म ग र ति दू उ म य ॥ सु ना द वि पा
र्व ति जि ॥ ध र्मा ॥ कृ त स मा सं ख ज वि वा य मू ज म ग र ति प ध मा
न प हा रू सु र नि ना म र व ज न क हा आ त्मा द व अ व ला र ति

याटिनिहवनहत्रियसूनातिनिहवन कत्रियऊनापदनपा
निहत्रिपूजगह॥कयामकूतनहत्रिवर्क्यककाजान
वेयावननऊगिंददनिगका॥सूनादविपार्वडि॥धर्म॥
सानमासंषऊश्रदिवर्क्यश्रनिनमायागिवसकीदवि
संजांगरयाहादनसफसानश्रदसकटिमायाजा
लकानकूंतलगलायसफसानसंखकपंनिगेहनन

सटमासंखवित्रश्रसमागंखवर्क्यअद्रिकांनंश्रनंयस्य
कधीनजायश्रनंदिगूश्रमाहादवनंटिसकानिदव
टाडुक्केकसिऊसमासंखश्रसिवकश्रदिनाथपूजाक
त्रिलखिन॥सूनादविपार्वनिडि॥धर्म॥यटायकंधर्म
संखसंपूर्णसंमूयदावुकनाहनंपापसूरीमूऊश्रऊ
नंनं संख्यापुलाटउकानंनिविकानंनिपायननहपूत्रपूथंन

हनंत ॥ ॐ नमः सिवाय २ संत वनपाद नमस्तुते ॥ मृतं ॥
 ॐ वृज्जिनेरुतं ॐ यिगभद गधं वनां न सगभय संखि नन
 संजनिमधूतसा नसा नयनिनिप्रायने वसमासयनाय
 टिवहवाजसां निवुनं वने वरु ३ ॥ ॥ ॥ असद सुनाने ला
 लयानसापंच मां पात कला क ऊल सुतं ॥ ॥ ॥
 निरिवेदमदसः जजुवेदपुर्व अथ अनवेदनपाल स्थाम

मृतं ॥ ॐ नमः सिवाय २ संत वनपाद नमस्तुते ॥ मृतं ॥

द वेद ह्मास यया न वृहा ॥ त्रला क त्रवेला क महला क उ
 नला क स्वर्गला क नपला क संनला क यनि स्वर्गनहा
 यि ॥ न न टला टला न सां न न पाल न्द न प न न न सु
 व्र यनि पा दाल हा यि ॥ सुतं मृ ॥ ॥ ॥ द ज न आसनला उ
 नानि सान वृजियनि क पा सि का हा यि ॥ ॥ ॥ ॥ उ मं उ नि डिं द
 सामूदा न ग न्प सफी ग न नाथ आदि नाथ का ति नाथ रसय यो

मृतं ॥ ॐ नमः सिवाय २ संत वनपाद नमस्तुते ॥ मृतं ॥